अन्यथा मिट्टी, पत्थर, स्वर्ण आदि किसी लौकिक पदार्थ से उसे कोई प्रयोजन नहीं। जो मनुष्य कृष्णभावना के आचरण में उससे सहयोग करे, उसे वह अपना प्रिय मित्र मानता है; वैसे तो जो उससे शत्रुता करता है, उससे भी द्वेष नहीं करता। उसकी स्थिति समता में है; वह सब कुछ समभाव से देखता है, क्योंकि वह भलीभाँति जानता है कि संसार से उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। वह सामाजिक तथा राजनीतिक विषयों से प्रभावित नहीं होता; वह जानता है कि ये सब उथल-पुथल और उत्पात तुच्छ और क्षणिक हैं। अपने लिए वह कोई कर्म नहीं करता; पर श्रीकृष्ण के लिए बिना संकोच कुछ भी कर सकता है। इस प्रकार के आचरण से वास्तव में गुणातीत हुआ जा सकता है।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते।।२६।।

माम्=मेरी; **च**=तथा; **यः**=जो; **अव्यभिचारेण**=अनन्य; **भक्तियोगेन**=भक्ति-योग से; **सेवते**=सेवा करता है; **सः**=वह; **गुणान्**=गुणों को; **समतीत्य**=भली-भाँति उल्लंघन करके; **एतान्**=इन तीनों; **ब्रह्मभूयाय**=ब्रह्मभूत; **कल्पते**=हो जाता है।

अनुवाद

जो पूर्णरूप से मेरे अनन्य भक्तियोग के परायण है, किसी स्थिति में उससे गिरता नहीं, वह अविलम्ब त्रिगुणमयी माया का उल्लंघन करके ब्रह्मभूत हो जाता है।।२६।।

तात्पर्य

इस श्लोक में गुणातीत अवस्था की प्राप्ति के साधन सम्बन्धी अर्जुन के तीसरे प्रश्न का समाधान है। पूर्ववर्णन के अनुसार, सम्पूर्ण प्राकृत-जगत् त्रिगुणमयी माया की आधीनता में कार्य कर रहा है। मायिक गुणों की क्रियाओं से उद्विग्न होना योग्य नहीं; अपनी चेतना को ऐसे कार्यों में लगाने के स्थान पर कृष्णपरक कर्म में लगाना चाहिए। निरन्तर श्रीकृष्ण के लिए कर्म करने को ही 'भक्तियोग' कहा जाता है। इसमें श्रीकृष्ण ही नहीं आते; बल्कि उनके राम, नारायण, आदि अंशों की सेवा भी इसी कोटि में है। श्रीकृष्ण के वस्तुतः असंख्य रूप और अंश हैं। इनमें से किसी भी रूप अथवा अंश की सेवा में लगा मनुष्य गुणातीत हो जाता है। यह भी स्मरण योग्य है कि श्रीकृष्ण के सभी रूप पूर्णतः गुणातीत, सच्चिदानन्दविग्रह, सर्वशक्तिमान, सर्वसमर्थ एवं चिन्मय गुणों से युक्त हैं। अतएव जो मनुष्य श्रीकृष्ण अथवा उनके स्वांशों की सेवा में अटूट निष्ठा सहित संलग्न रहता है, वह माया के दुस्तर गुणों को भी सुगमतापूर्वक तर जाता है। सातवें अध्याय में यह पहले ही कहा जा चुका है। श्रीकृष्ण का शरणागत जीव तत्क्षण माया का उल्लंघन कर लेता है। कृष्णभावना अथवा भक्तियोग से युक्त होना चिद्गुणों में श्रीकृष्ण की समानता प्राप्त करना है। श्रीभगवान् कहते हैं कि उनका स्वभाव सच्चिदानन्दमय है। जीव श्रीकृष्ण के भिन्न-अंश हैं; इसलिए जैसे स्वर्ण के